कान्हा, पिथोरा अरण्य औषधियाँ

म.प्र. स्वैच्छिक स्वास्थ्य संगठन

कान्हा, पिथोरा अरण्य औषधियाँ

Khanha pithora Aranya
Oushadiya

म. प्र. स्वैच्छिक स्वास्थ्य संगठन
८६/२, तिरूपति कॉलोनी
इन्दौर म.प्र.
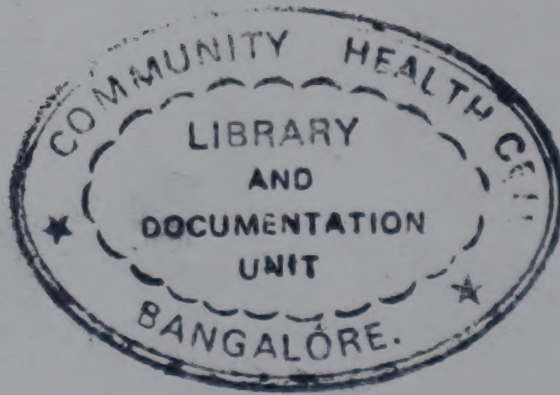
म. प्र. स्वैच्छिक स्वास्थ्य संगठन, द्वारा प्रकाशित
सत् प्रचार प्रेस, इन्दौर, द्वारा मुद्रित
प्रथम संस्करण : जुलाई १९८९ मूल्य : ६

भूमिका

मानव जीवन आरम्भ से ही प्रकृति पर पूर्णतया निर्भर था, और प्रकृति का ही उसे पूर्ण सहयोग प्राप्त था। किन्तु धीरे-धीरे मानव प्रकृति के महत्व को भूलने लगा, और प्रगति की दौड़ में दौड़ते हुए बिना उचित अनुचित सोचे उसके विनाश के प्रति आकर्षित होने लगा। इस प्रक्रिया में प्रकृति की कुछ अमूल्य उपलब्धियों को भी उसने खोना प्रारंभ कर दिया है, जिनमें से एक है, "हमारी परम्परागत चिकित्सा प्रणाली" जो कि महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी लुप्त होती जा रही है। जबकि यह चिकित्सा प्रणाली मानव के अधिक निकट और उसे पूर्णतया सुरक्षित रखने वाली है।

हमारे देश की ८० प्रतिशत आबादी गाँव में निवास करती है। जिनमें से अधिकांश ग्रामीण जनता गरीब और अशिक्षित है, एवं प्रायः गाँव तत्काल सुविधाओं से सदैव वंचित ही रहते हैं। यदि सुविधायें उपलब्ध भी हों, तो भी गरीब समुदाय की आर्थिक स्थिति इस बात की आज्ञा नहीं देती कि वे उन सुविधाओं का त्वरित लाभ उठा सकें।

परम्परागत चिकित्सा प्रणाली का महत्व जानते हुए, और हमारे देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह आवश्यक है, कि हम सब मिलकर इस चिकित्सा प्रणाली को बढ़ावा दें। व्यापक रूप से इसका प्रचार-प्रसार करके मानव मात्र को इसके महत्व से परिचित करायें, ताकि किसी भी मामूली बीमारी या सामान्यतया मौसम बदलने पर प्रायः हो जाने वाली बीमारियों के लिये किसी भी व्यक्ति को विशेषतौर से गाँववासी को इधर-उधर न भटकना पड़े। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को निराश न होना पड़े। क्योंकि कई छोटी-छोटी चीजें तो हमारे घर पर ही उपलब्ध होती हैं, किन्तु जानकारी के अभाव में हम सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं कर पाते हैं।

इन्हीं सब बातों को देखते हुए, हमने इस दिशा में कुछ संकलित करने का प्रयास किया है। हमारे इस प्रयास में हमने जबलपुर और रायपुर क्षेत्र में कुछ विशेषज्ञों और वैद्यों की सहायता से वैद्य सम्मेलनों का आयोजन किया। तथा कान्हा और पिथौरा के जंगलों से जड़ी-

बूटियाँ भी एकत्रित कीं, प्रारम्भ में सभी वैद्यों ने अपनी-अपनी जानकारियों का आदान-प्रदान किया, जिससे कि मालूम हुआ कि एक ही प्रकार के पौधे को विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है, और अलग-अलग तरीकों से भिन्न-भिन्न बीमारियों में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की जानकारी से सभी वैद्य लाभान्वित हुए और उनकी जानकारी में वृद्धि भी हुई।

प्रयास के दूसरे चरण में कान्हा और पिथौरा के जंगलों से सभी वैद्यों ने समूह में बँटकर साथ आये विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में जड़ी-बूटियाँ एकत्रित कीं, तत्पश्चात उनसे संबंधित जानकारी का आदान-प्रदान किया। तदोपरान्त जड़ी-बूटियों का हरबेरियम तैयार किया गया, जिससे भविष्य में और भी लोग उससे लाभ ले सकें।

कुछ जानकारियाँ विवादास्पद भी रहीं, किन्तु वे भी जानकारी के लिये प्रस्तुत हैं। अंत में वैद्यों और विशेषज्ञों द्वारा उपलब्ध जानकारी के आधार पर यह संकलन आपके सामने ज्यों का त्यों प्रस्तुत है, आशा है आप इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। हम उन सभी वैद्यों और विशेषज्ञों के आभारी हैं, जिनके सहयोग से हम इसे पुस्तकीय स्वरूप प्रदान कर सके।

राज भुजबल
कार्यकारी सचिव

आभार.....

पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में यूं तो कई पुस्तकें हैं, किंतु एक विनम्र प्रयास इस दिशा में हमने भी किया है, जो कि श्री टी. एन. मंजूनाथ, श्री जागेश्वर भाई पटेल, श्री श्याम बहादुर नम्र, श्री भरत लाल पंत तथा रायपुर और जबलपुर क्षेत्र के वैद्यों की सहायता एवं सहयोग से संभव हो पाया है, हम इन सभी के आभारी हैं, जिनके सहयोग से हम इसे पुस्तकीय स्वरूप प्रदान कर पाये हैं।

अनुक्रमणिका

क्रम	औषधि	पृष्ठ संख्या

कान्हा, पिथोरा अरण्य औषधियाँ

(१) **औषधि का नामः–**

ओरा चारा : जबलपुर व सिवनी में इसे दूसरा चारा या कुसट चारा भी कहा जाता है। इसकी ऊँचाई चार फुट से लेकर सात फुट तक होती है। यह इससे अधिक ऊँचा नहीं होता।

उपयोगः–

नपुसंकता व जानवरों को गर्मी या हीट पर लाने के लिए।

प्रयोग विधिः–

इसके दानों का तेल निकालकर शिलाजीत में मिलाकर इसकी गोली बना लेते हैं। प्रतिदिन एक-एक गोली चने के आकार की लेने से नपुसंकता जाती रहती है।

---

(२) **औषधि का नामः–**

अरण्डी : संस्कृत में इसे एरण्ड कहा जाता है। यह सभी जगह पाया जाता है, तथा इसकी ऊँचाई ८ से १४ फीट तक होती है। इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं।

उपयोगः–

सर्वांगशोथ, आँख में दर्द, पसली दर्द, बदन दर्द, दस्त कारक, चर्मरोग, परिवार नियोजन में उपयोग में लाया जाता है।

प्रयोग विधिः–

सर्वांगशोथ में : इसके पत्तों को गरम करके घी या तेल लगाकर बांधने से सूजन ठीक हो जाती है।

आँख के दर्द में : इसके पत्ते के रस को कान में डालते हैं। यदि बाँई आँख में दर्द हो तो बाँयें कान में रस डालने से आराम मिलता है।

पसली व टखनों के दर्द में : इसके पत्तों को गर्म करके बाँधने से दर्द में आराम होता है।

जुलाब के लिए : इसके फल के दानों को निकालकर इसका तेल निकाला जाता है। यह तेल ४ से ८ चम्मच पिलाने से दस्त साफ हो जाते हैं। इसे अंग्रेजी में केस्टर आइल कहा जाता है।

चर्मरोग में : इसके तेल को लगाने से चर्म रोग ठीक होते है। गर्मी के दिनों में सिर पर लगाने से ठंडक पहुँचती है।

परिवार नियोजन में : इसके बीज के ऊपर के छिलके को निकाल कर अन्दर की गिरी को रोज खाने से गर्भ नहीं रहता। मासिक धर्म बंद होने के दिन से इसकी गिरी को प्रतिदिन एक केप्सूल की भाँति यदि छः सात माह तक लें तो वह स्त्री गर्भ धारण नहीं कर सकती।

---

(३) औषधि का नामः–

भृंगराज : म. प्र. के भिन्न-भिन्न जिलों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे बिलासपुर जिले में खिण्योंपका भंगरा आदि नामों से इसे जाना जाता है। यह पौधा नुमा घास है। सभी जगह पाया जाता है।

उपयोगः–

बाल काले करने में औषधि शुद्ध करने में, पैर के तलवे फटने में, नशाखोरी दूर करने में तथा कुकर खांसी में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

बाल काले करने में: इस पौधे का उपयोग आम तौर पर रसायन बनाकर बाल काले करने में आता है। इसके तेल के साथ अनार के रस को मिलाकर शीशी या बोतल में भरकर जमीन में गाड़ (दबा) देते हैं। इसे तीन माह तक जमीन के अन्दर रखने के बाद निकालकर बाल में लगाने से बाल काले हो जाते हैं।

औषधि शुद्ध करने में: इसका उपयोग किया जाता है।

पैर के तलवे फतने में : इसके रस का उपयोग ठण्ड या बरसात में, पैर के तलवे या बवाई फटने पर गर्म करके लगाया जाता है।

नशाखोरी दूर करने में : इलेक्ट्रो होम्योपैथ्य में इसके रस का इन्जेक्शन बनाकर नशाखोरी की आदत छुड़ाने के काम में लाते हैं।

कुकर खांसी में : इसके पत्ते को तवे में रख कर ढंक देते हैं। जब पत्ता जल जाता है, तब उसकी राख बनाकर शहद के साथ खाने से श्वांश रोग व कुकर खांसी में लाभ होता है।

---

(४) औषधि का नाम :–

बारामासी, खंरेटी, पतरचट्टा, औछान, फुलेरा लारा, : खरगोश इसे बहुत शौक से खाता है। इसकी ऊँचाई दो फुट तक होती है तथा यह बारह माह सभी स्थानों पर पाई जाती है।

उपयोगः–

केंसर दर्द, बड़े फोड़े, पेशाब में जलन : रोग में उपयोग में लायी जाती है।

प्रयोग विधिः–

केंसर दर्द : इसके पत्तों को पीसकर लुगदी बनाकर तालु पर (सिर में) लगातार ८ घंटे तक रखने पर उसमें कीटाणु आ जाते हैं।

बड़े फोड़े : इसके पत्ते पीसकर मिट्टी के बर्तन में गर्म करके लगा देने से लाभ होता है।

पेशाब में जलन : इसकी जड़ को गर्म करके पीसकर खिलाने से पेशाब में जलन ठीक हो जाती है।

---

(५) औषधि का नामः–

केला : इसका पौधा काफी ऊँचा होता है। यह सभी जगह पाया जाता है।

उपयोगः–

दमा, दस्त लगने पर : पेट में किसी धातु के चले जाने पर उसको निकालने में, पथरी में व बुखार उतारने में, जुलाब के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

दमा रोग में : पके केले के छिलके को जलाकर राख बना लें। इस राख को शहद के साथ देने से, छोटे बच्चों का दमा रोग ठीक हो जाता है।

दस्त लगने पर : कच्चे केले का गूदा खाने से पतले दस्त ठीक हो जाते हैं।

पेट में धातु चले जाने पर : अधिकांश छोटे बच्चे जब कोई धातु (जैसे:– पैसे के सिक्के वगैरह मुंह में निगल जाते हैं।) तब उसे निकालने के लिये पके केले का इस्तेमाल किया जाता है। इसे अधिक से अधिक मात्रा में खिलाने पर धातु के सिक्के मल के साथ बाहर निकल जाते है।

पथरी रोग में : इसके तने के बीच के भाग की सब्जी बनाकर खाने से पथरी गलकर पेशाब के रास्ते बाहर निकल जाती हैं।

बुखार उतारने में : केले के सूखे पत्ते को जलाकर उसकी राख को गाय के घी में मिलाकर पैर के तलवे व हाथ, पैर के सभी नाखूनों में लगाने से बुखार दूर हो जाता है।

जुलाब के लिए : इसके तने के छिलके के रस को एक कप चाय में ३ या ४ बूंद डालकर पिलाने से पतले दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

---

(६) औषधि का नामः–

कजेरा, चुन्चु : यह ५-६ फुट तक ऊँचा होता है तथा सभी जगह पाया जाता है।

उपयोगः–

घाव भरने के काम आता है।

प्रयोग विधिः–

इसका पंचांग रस निकालकर सरसों का तेल मिलाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

---

(७) औषधि का नामः–

अनन्तमूल, हिरनचरी : व शहडोल जिले में दूध कापरी के नाम से जाना जाता है। यह लता (बेल) के रूप में बढ़ती है। यह पेड़ की ऊँचाई के साथ १२ से १४ फीट तक बढ़ती है। यह जमीन में भी फैल सकती है। यह हर मौसम में हर जगह पायी जाती है।

उपयोगः–

चर्मरोग, पेशाब की जलन, सर्प काटने पर व दशमूल बनाने में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

चर्मरोग : इसकी जड़ को काली मिर्च के साथ पीसकर लगाने से सिंहवा रोग ठीक हो जाता है। यह अक्सर छाती या गले पर दिखाई देता है।

पेशाब की जलन में : इसकी जड़ को खाने से पेशाब की जलन दूर हो जाती है।

सर्प काटने पर : दूध कापरी की जड़ का रस नाक में डालने से सर्प काटा व्यक्ति ठीक हो जाता है। ऐसा कहते हैं कि सर्प विष से ग्रस्त मृत व्यक्ति भी जिन्दा हो जाता है।

दशमूल बनाने में : दशमूल बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। इसका उपयोग प्रसव के समय भी किया जाता है।

---

(८) औषधि का नामः—

कुब्बी या कुतबी : यह लगभग ३ फुट ऊँचा होता है। यह हर स्थान पर विशेषकर ठंडे स्थानों में सभी जगह पाया जाता है।

उपयोगः—

रक्त बन्द करने, सिद दर्द में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

रक्त बंद करने में : इसके पत्तों को पीसकर इसका रस निकाल लें व जिस स्थान पर चोट के कारण रक्त बह रहा हो लगा दें। इससे रक्त बहना बंद हो जायेगा। यह टिंचर का काम करता है।

सिर दर्द में : इसके पत्ते को पीसकर माथे पर लगाने से सिर दर्द दूर हो जाता है।

---

(९) औषधि का नाम :

तीन पत्ते का पलास, पिलीया पलास, भदौरा बेला, लता पलास : आदि नामों से इसे जाना जाता है। यह विशेषकर जंगलों में पायी जाती है। यह लता जाली की तथा २० से ७५ फीट तक लम्बी होती है।

उपयोग :—

पौष्टिकता के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

इसके कन्द को उबालकर शक्कर के साथ हलुवा बनाकर खाने से ताकत मिलती है। व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

---

(१०) औषधि का नामः—

नागफनी, पत्रवाली : इसका पौधा हर जगह, हर मौसम में पाया जाता है। इसकी ऊँचाई लगभग ५ फीट तक होती है।

उपयोगः—

पतले दस्त बन्द करने में, जलने पर, पौष्टिकता के लिए तथा वात रोग में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

पतले दस्त बन्द करने में : नागफनी के पत्ते को आग में पकाकर इसके गूदे को शक्कर के साथ खाने से दस्त ठीक हो जाते हैं।

जलने में : इसके पत्ते के रस को लगाने से जलन दूर हो जाती है।

पौष्टिकता के लिए : इसके फल को पक जाने पर इसका रस निकालकर देने से बच्चे तन्दुरुस्त होते हैं।

वात रोग में : इसके गूदे को मैथी के लड्डू में मिलाकर खाने से वात रोग ठीक हो जाता है। यह दिसम्बर से फरवरी तक खाना चाहिए।

---

(११) औषधि का नामः–

लहजीरा, चिरचिटा, अध्धाझाड़ा, अपामार्ग : यह २ से ३ फुट तक ऊँचा होता है तथा यह हर जगह ठंड़े स्थानों पर तथा हर मौसम में पाया जाता है।

उपयोगः–

इसका उपयोग विषनाश व शूल में किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को बिच्छू काटने पर, इसको कूटकर काटे स्थान पर लगाने से विष दूर हो जाता है।

शूल : इसका पंचांग रस या चूर्ण देने से शूल में लाभ होता है।

---

(१२) औषधि का नामः–

पचकुरिया, पंचगुडरू, शिर्वालगी, चित्रगोटी, : यह लता होती है तथा १५-२० फुट तक लम्बी होती है तथा यह दिसम्बर से मार्च तक हर जगह मिलती है।

उपयोगः–

बुखार उतारने में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसके फल को घी या तेल में तलकर देने से बुखार ठीक हो जाता है।

---

(१३) औषधि का नामः–

बहुमूली : यह अधिकांश महुआ के पेड़ के नीचे, इसका पौधा पाया जाता है। इसकी ऊँचाई १ से २ फीट तक होती है। यह हर मौसम में हर जगह पाया जाता है।

उपयोगः–

बच्चों के आँव, दस्त में इसका उपयोग होता है।

प्रयोग विधिः–

इसके फूल के रस को देने से आँव ठीक होती है एवं नाभी पर लगाने से मरोड़ आने में फायदा करता है।

इसकी जड़ के रस को देने से दस्त ठीक होते हैं।

---

(१४) औषधि का नामः–

हटशंकर : यह डंटल नुमा पौधा है। इसमें पत्ते नहीं होते हैं। लगभग १० से १२ फुट ऊँचा होता है। यह जंगलों में व चट्टानों पर पाया जाता है। इसकी कलम लगाने से हर जगह लग जाती है।

उपयोगः–

चोट लगने व उस स्थान पर होने वाले दर्द में, खाँसी रोग (दमा) में लाभ कर पाया गया है।

प्रयोग विधिः–

चोट लगने पर : इसके दूध को चोट पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

दमा में : इसके पौधे को सुखाकर चिलम में रखकर धूम्रपान करने से श्वाँस रोग ठीक हो जाता है।

---

(१५) औषधि का नामः–

विद्यानाशी, सिरमिली, ठनठली : यह ७ फुट तक ऊँचा होता है। यह खेतों में पाया जाता है। यह जनवरी तक रहता है। यह बहुवर्षीय है।

उपयोगः–

निमोनिया, हिस्टीरिया रोग में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

निमोनिया में : इसके दानों को बाँटकर और उनको गर्म लोटे से सेकना चाहिए तथा पसली पर लगाया जाता है जिससे निमोनिया रोग दूर होता है।

हिस्टीरिया में : जिसको यह रोग होता है। पानी में चूना डालकर इसके डंठल को उसमें डालकर और हाथ में बाँध लेते हैं जिससे हिस्टीरिया दूर होता है।

---

(१६) औषधि का नामः–

लपटनिया लारा : यह सभी जगह तथा जनवरी माह तक पाया जाता है यह ३ फुट तक होता है।

उपयोगः–

स्मृति खराब, दाँत के रोग में इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

स्मृति खराब : जिसकी स्मृति खराब हो जाती है, उसे इसका काढ़ा बनाकर दिया जाता है, तथा इसमें काली मिर्च मिलाने से इसके गुण धर्म बढ़ जाते हैं, इसे दिन में दो बार देते हैं।

दाँत के रोग में : जिसमें कि दाँत से मवाद नहीं निकलता है उसमें इसके काढ़े को सूर्य उदय से पहले तथा सूर्य अस्त के बाद हलका कुल्ला करने से यह रोग दूर हो जाता है।

---

(१७) औषधि का नामः–

चौलाई भाजी, खुटनी भाजी : यह ऐसी भूमि में पाया जाता है जहाँ लोहा अधिक मिलता है तथा यह २ से ३ फुट तक ऊँचा होता है तथा सभी जगह मिलता है।

उपयोगः–

रक्त वर्धकः–इसकी भाजी खून की कमी को दूर करती है।

श्वेत प्रदरः–इसके काढ़े का उपयोग श्वेत प्रदर में करते हैं तथा इसमें चावल का धोवन मिलाकर देते हैं। इसमें विटामिन बी अधिक होता है इसके काढ़े में नमक नहीं डालना चाहिये।

(१८) औषधि का नामः–

चाँदनी (सफेद फूल) दूध भौंगरा : इसका पौधा ५ से १० फुट तक ऊँचा होता है, तथा बगीचों में पाया जाता है। यह बहुवार्षिक पौधा है तथा इसमें से दूध निकलता है।

उपयोगः–

आँख आने परः–इसके फूल के रस को डिस्टलवाटर या आसुतजल में मिलाकर आँख में डालने पर आँख का रोग ठीक होता है। एक कप पानी में एक बूंद फूल का रस।

स्नायुतंत्रः–भ्रमित स्थिति में इसके फूल, पत्ती और बोंडी को मिलाकर काढ़ा बनाइए और इसमें मिश्री डालकर एक चम्मच दिन में तीन बार देते हैं, तथा दवा खाली पेट नहीं खाना चाहिए। एक कप काढ़े में एक पाव पानी मिलाना चाहिए।

---

(१९) औषधि का नामः–

सेमल, सेमर: यह वृक्ष होता है और हर जगह पाया जाता है। इसके पेड़ में काँटे होते हैं।

उपयोगः–

फोड़ा बैठाने के लिये, पोष्टिकता के लिए, मासिक धर्म की गड़बड़ी तथा बाँझपन में (बाँझपन में यह उपयोगी है)

प्रयोग विधिः–

फोड़ा बिना मुँहवालाः–इसके नये पौधे की जड़ को (जो करीब दो साल का हो) काटें। छीलकर पीस लें। पीसकर इसका लेप फोड़े पर करें। इससे या तो फोड़ा बैठ जायेगा या उसको पकाकर मवाद निकाल देगा।

पोष्टिकता मेंः–इसके नये पौधे की जड़ या कान्दे को सुखाकर चूर्ण बना लें, इसका एक चम्मच चूर्ण-शहद के साथ प्रतिदिन खाने से पोष्टिकता प्रदान करता है। यह औरतों को नहीं दिया।

मासिक धर्म ठीक न होने परः–इसके फूल का उपयोग किया जाता है। इसके अध खिले फूल का चूर्ण बनाकर सुखा लें इसकी मात्रा इस प्रकार लें।

१०० ग्राम फूल का चूर्ण–५० ग्राम गुड़, १ ग्राम काली मिर्च सबको मिलाकर चने के आकार की गोली बना लें। इसका सेवन मासिक धर्म आने के दस दिन पहले से शुरू करें। एक-एक गोली सुबह शाम पाँच दिन तक लें। मासिक धर्म नियमित होकर ठीक से आने लगेगा।

बाँझपन के लियेः–इसका पूर्ण विकसित एक फूल, लेंडी पीपल आधे चने के बराबर एक पाव पानी में डालकर काढ़ा बनाएं। यह काढ़ा जब आधा पाव रह जाय तब उसको उतार लें। इसमें मिश्री व खजूर के छिलके का रस सूर्य निकलने से पहले लगातार तीन माह तक देने से बाँझपन दूर हो जाता है।

(२०) औषधि का नामः–

धर्मछड़ी सेहारा : धर्म कोत्रा व कहीं-कहीं राम दतौन के नाम से जानी जाती है।

उपयोगः–

सफेद दस्त में सुजाक, उपदंश, फिरंग (सिफलिस, गोनेरिया) रोग में बहूउपयोगी है।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को पीसकर सफेद दस्त व हैजा के समय में एक पाव पानी के साथ दिया जाता है।

सुजाकः–इसकी जड़ को बारीक काटकर इसमें काला इगून (जो पंसारी की दुकान पर मिलता है) मिलाकर इसके पत्ते की बीड़ी बनाकर पीने मे गर्मी रोग, सुजाक, गोनेरिया सिफलिस आदि में लाभ होता है। १०० ग्राम चूरे में राई बराबर काला इगून मिलावें।

---

(२१) औषधि का नामः–

धनवन्तरी नागदाना : यह पथरीली भूमि में पाया जाता है। इसकी ऊँचाई लगभग ३ से ४ फुट तक होती है। इसको तोड़ने पर दूध निकलता है।

उपयोगः–

कोबरा सर्प के काटने पर तथा चर्म रोग में किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ के रस को निकाल लें। गाय के घी में एक चम्मच रस मिलाकर पिलाने से जहर उतर जाता है। तथा काटे हुए स्थान से एक इंच ऊपर व आसपास इसमें लुगदी (पंचांग की) बनाकर लगाने से यह उस स्थान के रक्त को थक्का (जम जाना) बना देता है। तथा यह जहर को बाहर निकालने की क्षमता रखता है।

चर्म रोगः–इसके पत्ते और धुई कान्दा को पीसकर लगाने से चर्म रोग ठीक हो जाता है।

---

(२२) औषधि का नामः–

सफेद मूसली : रायगढ़ जिले में कौहुवा पूडी या कहुआगुडी भी कहा जाता है। इसकी ऊँचाई डेढ़ फीट तक होती है। इस पौधे की पत्तियाँ छुरे के आकार की होती हैं। यह बहुवार्षिक है, इसका कांदा जमीन में सूख जाता है व बरसात में पुनः उग आता है। यह जंगलों में पाया जाता है।

उपयोगः–

बलवर्धक, बिच्छू दंश व प्रसवकारक है।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ व सेमल की जड़ दोनों बराबर लेकर सूखाकर, कूटकर चूर्ण बना लें व इस चूर्ण को प्रतिदिन एक चम्मच खाने से यह शरीर को ताकत देता है।

इसकी जड़ को पीसकर बिच्छू काटे स्थान पर लगाने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

जब इसका पौधा फूला हुग्रा हो तब इसकी जड़ को निकालकर-पीसकर गुड़ के साथ खाने से प्रसव जल्दी व ग्रासानी से हो जाता है।

---

(२३) ग्रौषधि का नामः–

तालमखाना, उलटाकांटा, तालपूखाल, ऊंटकटारा : ग्रादि नामों से इस पौधे को जाना जाता है। इसकी ऊँचाई दो से तीन फुट तक होती है, यह ग्रधिकतर नम स्थानों पर पाया जाता है।

उपयोगः–

गर्मी बढ़ने पर एवं पेशाब की जलन में।

प्रयोग विधिः–

इसके बीज का प्रयोग होता है। इसके बीज को पीसकर एक चम्मच रोज प्रातः काल पानी के साथ तीन दिन तक सेवन करने से पेशाब की जलन जाती रहती है।

---

(२४) ग्रौषधि का नामः–

खर्रा : खंडारी व खडहर नाम से जाना जाता है। यह जंगलों में वृक्ष के रूप में पाया जाता है। खेत, बगीचे में इसे पौधे के रूप में लगाया जा सकता है। यह बहुत ही उपयोगी वृक्ष है। इसके फल की सब्जी भी खाई जाती है।

उपयोगः–

ग्रधकपारी या ग्राधा शिशी दर्द एवं सर्प दंश में बहुपयोगी है।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को पीसकर इसके रस को नाक में डालने से ग्रधकपारी या ग्राधाशिशी दर्द ठीक हो जाता है। इसको नाक में डालने के बाद छींक बहुत ग्राती है।

इसकी जड ग्रौर महुवे की छाल को पीसकर साँप काटे स्थान पर लगाने से सर्पदंश ठीक हो जाता है।

---

(२५) औषधि का नामः–

धनकट, मरोड़ फली: यह एक छोटा-सा पेड़ होता है। तथा यह जंगलों में पाया जाता है। यह बहुवार्षिक है।

उपयोगः–

पेट की ऐंठन और दस्त में लाभदायक होता है।

प्रयोग विधिः–

इसकी फली को मट्ठा के साथ देने से पेट की ऐंठन व दस्त में लाभ होता है।

---

(२६) औषधि का नामः–

अरहर तूअर: यह एक पौधा होता है और खेतों में पाया जाता है। इसकी पत्ती को रसना पत्ती बोलते हैं।

उपयोग व प्रयोग विधिः–

इसकी पत्ती का मुलायम भाग पीसकर पिलाने से पेट की ऐंठन तथा दस्त को लाभ देता हैं।

इसकी पत्ती को पीसकर फोडे में लगाने से फोड़ा ठीक होता है।

इसके दाने को उबालकर पानी लाल होने तक पकाना चाहिये तथा पानी को पीने से सर्दी ठीक होती है।

नारू रोग में इसकी दाल को पकाकर नारू में बाँधने पर नारू कीड़ा बाहर निकल आता है।

---

(२७) औषधि का नामः–

जटाशंकर: यह लता होती है और जंगलों में पायी जाती है।

उपयोगः–

बिच्छू का जहर उतारने में व नपुंसकता दूर करने के उपयोग में आती है।

प्रयोग विधिः–

जड़ को पीसकर लगाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

नपुंसकता में इसकी जड़ को पीसकर गुड़ की गोली बनाकर एक-एक गोली दिन में दो बार (सुबह-शाम) ५ दिन तक लेने से नपुंसकता दूर हो जाती है।

---

(२८) औषधि का नामः–

वनतुलसी: इस पौधे की ऊँचाई २ से ३ फीट तक होती है। यह जंगलों में पाया जाता है। इसकी पैदाइश वर्षान्त में होती है व ठण्ड तक रहता है।

उपयोगः–

श्वांस रोग में (दमा) एवं मच्छरों को भगाने में उपयोगी है।

प्रयोग विधिः–

इसके पंचांग का चूरा बनाकर धूम्रपान करने से श्वांस रोग में आराम मिलता है।

इसका धुआँ करने से मच्छर भाग जाते हैं।

---

(२९) औषधि का नामः–

मदार, अकौना, अकौआ, आक आदि नामों से जाना जाता है। यह उपविष है, अर्थात जहरीला पौधा है।

उपयोगः–

कुत्ता काटने पर, फोड़े को पकाकर फोड़ने में, घाव ठीक करने में, श्वांस रोग में, वात रोग में, कुकर खाँसी में बहुत लाभ देने वाला होता है।

प्रयोग विधिः–

कुत्ता काटने पर : इसके फूल का आकार भी कुत्ते जैसा होता है। इसके एक फूल की बौड़ी गुड़ के साथ मिलाकर गोली बना लें व प्रतिदिन एक गोली ७ दिन तक देने से कुत्ते का जहर नहीं चढ़ता।

इसके पत्ते को गरम करके इसकी पीठ पर घी या तेल लगाकर घाव पर रखने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है, व फूटे फोड़े के घाव पर सीधे पत्ते पर घी या तेल लगाकर बाँधने से जल्दी आराम होता है।

श्वांस रोग में:–इसके फूल को सुखाकर मसूर के आकार की गोली बना लें। यह गोली दिन में तीन बार सुबह, दोपहर व शाम ठीक होने तक प्रतिदिन लें।

वात रोग में:–इसके पंचांग को तेल में मिलाकर लगाने से या मालिश करने से वात रोग नहीं रहता।

श्वांस, कुकर खाँसी में:–इसके तने का दूध निकालकर नारियल में तीली से छेद करके उसमें सम्पूर्ण दूध भर दीजिये। नारियल में दूध भर जाने के बाद उसके मुह पर आटे की लुगदी बनाकर लेप कर दें व उसे

आग में अंगारे पर डाल दें। जब वह अच्छी तरह पक जाय, उसके ऊपर की रोटी जल जाय तब उसे निकालकर उसके अन्दर की गीरी की मसूर के आकार की गोली बनाकर दिन में तीन बार लेने से श्वांस रोग में व कफ तथा खाँसी में आराम हो जाता है।

---

(३०) औषधि का नामः–

मंन्हर : यह झाड़ी जाति का होता है। आम तौर पर यह जंगलों में पाया जाता है।

उपयोगः–

उल्टी कराने के लिये व अम्लपित्त रोग दूर करने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

उल्टी कराने मेंः–इसके पके फल का क्वाथ बनाकर पीने से उल्टी हो जाती है। विशेषकर जहर खा लेने वाले व्यक्ति को इसे देने से जहर बाहर कै के साथ आ जाता है।

---

(३१) औषधि का नामः–

आँवला, आमला, औला आदि नामों से जाना जाता है। इसका पेड होता है और यह सर्वत्र पाया जाता है।

उपयोगः–

कब्जनाशक, पित्तनाशक, ठण्डक पहुँचाने व मन को शांति देकर दीर्घायु करने में उपयोगी पाया गया है।

प्रयोग विधिः–

कब्जनाशक–इसका अचार खाने से कब्जीयत दूर होती है व भूख बढ़ती है।

पित्तनाशकः–पित्त के कारण जो रोग होते हैं। इसके प्रतिदिन सेवन करने से शांत होते हैं।

चक्कर आने मेंः–इसका मुरब्बा खाने से अम्लपित्त दूर होता है तथा चक्कर आना बंद हो जाते हैं।

दीर्घायु मेंः–ग्रन्थों में लिखा है कि यदि व्यक्ति प्रतिदिन एक आँवले का सेवन करें तो वह सौ वर्ष तक बिना किसी व्याधि के जी सकता है।

गर्मी मेंः–गर्मी के दिनों में अधिक गर्मी बढ़ जाने में व चक्कर आने पर इसके फल को कूच कर सिर पर लेप करने से गर्मी शांत होती है।

सूखे फल को पानी में भिगोकर, उसका गूदा निकाल कर लेप करने से भी गर्मी शान्त होती है। लेप सिर पर या तालू पर करना चाहिये।

दंत रोग में:—यह विटामिन सी युक्त है, अतः दांत के रोग में भी लाभदायक है।

---

(३२) औषधि का नामः—

दमजरी घांस

उपयोगः—

मलेरिया बुखार में

प्रयोग विधिः—

इस पौधे की पत्ती प्रयोग में लायी जाती है। मलेरिया बुखार में बड़ों को ३ से ५ पत्ती व बच्चों को १ से २ पत्ती ३ दिन तक देने से मलेरिया बुखार ठीक हो जाता है।

---

(३३) औषधि का नामः—

डीकामाली, बिनामाली, इसका पौधा ५ से ७ फिट ऊँचा होता है। इसे बगीचे में उगाया जा सकता है। इसके तने से दूध व गोंद निकलता है।

उपयोगः—

बच्चों के दस्त में, एवं कृमि रोग एवं पीलिया रोग में किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

माँ के दूध में गोंद मिलाकर देने से बच्चों के दस्त ठीक हो जाते हैं।

गोंद खिलाने से कृमि या चुन्नी कृमि नष्ट हो जाते हैं। इसके गोंद की गोली चने के बराबर बनाकर १-१ गोली दिन में ३ बार ७ दिन तक खाने से पीलिया रोग ठीक होता है।

(३४) औषधि का नामः—

पीला कनेर : यह फूल का पौधा है। हर जगह पाया जाता है। यह जहरीला होता है।

उपयोगः—

यह चर्मरोग एवं शूल नाशक है।

प्रयोग विधिः—

इसकी जड़ को तेल में उबालकर उस तेल को मालिश के काम में लाया जाता है। इसके उपयोग मे चर्मकुष्ठ रोग दूर होकर उनके दर्द को ठीक करता है।

---

(३५) औषधि का नामः–

चिट, छिंदी या छीं : यह झाड़ीनुमा पौधा है। इसकी पत्तियाँ खजूर की पत्तियों जैसी होती है। ऊँचाई लगभग ३ से ४ फुट तक होती है।

उपयोगः–

स्वपन दोष में, बुखार में व भूख बढ़ाने में किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसके कंद के रस को निकालकर प्रतिदिन दो-दो तोला सेवन करने से स्वपन दोष की बीमारी ठीक हो जाती है।

इसका कंद भूखवर्धक व बुखार में भी लाभदायक होता है।

(३६) औषधि का नामः–

सत्तावरी, सतावर कंसागों लता आदि : यह लता जाली का पौधा है। इसकी बेल पेड़ों पर ऊपर तक पहुँच जाती है।

उपयोगः–

कमर दर्द में, पोष्टिकता के लिए, प्रसूतावस्था व दूधवर्धक है।

प्रयोग विधिः–

सतावर के कन्द का चूर्ण काली मिर्च के साथ खाने से कमर दर्द दूर हो जाता है।

इसका हर हिस्से का पंचांग, चूर्ण व काढ़ा लेने से शरीर को ताकत देकर हृष्ट-पुष्ट बनाता है।

यह शीतनाशक व वायुनाशक है।

प्रसूतावस्था में लाभदायक है व जिन महिलाओं को दूध कम आता है उन्हें इसका काढ़ा बनाकर देने से दूध में बढ़ोत्तरी होती है।

---

(३७) औषधि का नामः–

सतगठामी घाँस : यह एक प्रकार की घास है। इसकी ऊँचाई डेढ़ फीट से अधिक नहीं होती है। यह बगीचों और नालों में हर जगह पायी जाती है।

उपयोगः–

पथरी गलाने में उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसके पूरे पंचांग का रस निकालकर एक-एक चम्मच रोज सुबह शाम देने से पथरी गलकर पेशाब के रास्ते बाहर आ जाती है।

कर्णशूल में सतगठिया के रस को कान में डालने से दर्द दूर हो जाता है।

---

(३८) औषधि का नामः–

बड़ी दूधी, दूधी इसका पौधा जंगलों में पाया जाता है। यह २ से ढाई फुट तक ऊँचा होता है। इसको तोड़ने से इसमें से दूध निकलता है।

उपयोगः–

दूध बढ़ाने व पतले दस्त में इसका प्रयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

पंचांग का रस दूध के साथ देने से दूध बढ़ता है।

इसकी जड़ के रस को बच्चों को देने से दस्त ठीक होते हैं।

———

(३९) औषधि का नामः–

छत्तीसगढ़ में **चरोठा,** व जोधपुर में **चकोरा,** व कहीं-कहीं पुआरा व संस्कृत में चक्रमद भी कहा जाता है। यह बरसात में होता है।

उपयोगः–

वातनाशक व काफी बनाने में उपयोग में लिया जाता है व भाजी भी खाई जाती है।

प्रयोग विधिः–

चक्रमद के बीज को पीसकर पिलाने से वात रोग ठीक होता है।

बरसात में इसकी सब्जी भी बनाकर खाई जाती है।

———

(४०) औषधि का नामः–

नागरमौना, गुठला, गुमला

उपयोगः–

रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) बढ़ने पर एवं बुखार में एवं मच्छर भगाने में।

प्रयोग विधिः–

इसके कंद का पाउडर बनाकर यह पाउडर ३ रत्ती व शहद दोनों मिलाकर दिन में तीन बार लेने से रक्तचाप की बीमारी ठीक होती है।

बुखार में इसका काढ़ा चाय में डालकर पीते हैं। धुएँ से मच्छर भागते हैं।

जले हुए भाग पर इसकी छाल को जलाकर के चूर्ण बना लें चूर्ण को नारियल के तेल में मिलाकर जले हुए भाग पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

———

(४१) औषधि का नाम:–

अतिबला, विषखबरी,

उपयोग:–

सूखा रोग, दुबलापन तथा फोड़े में लाभदायक है।

प्रयोग विधि:–

सूखा रोग–इसका रस निकालकर बच्चे के सूखे रोग में प्रतिदिन मालिश करने से बच्चा तन्दुरूस्त हो जाता है।

बुखार आने पर जो लोग दुबले हो जाते हैं उन्हें भी इसके रस की मालिश करने से मजबूती आ जाती है।

फोड़े में:–अतिबला की पत्ती को पीसकर थोड़ा गुनगुना गरम करके फोड़े पर बाँधने या लेप करने से फोड़ा या तो बैठ जायेगा या पककर फूट जायेगा।

---

(४२) औषधि का नाम:–

भैंसा लाखन, भैंसा अण्डी

उपयोग:–

पेचिस वाला दस्त ठीक होता है।

---

(४३) औषधि का नाम:–

पडिन, गिलौई।

उपयोग:–

मलरिया बुखार, उदर रोग, बवासीर, कमर दर्द, खूनी पेचिस, (टी. बी.) तपेदिक आदि रोग में उपयोगी है।

प्रयोग विधि:–

मलरिया में इसकी २ इंच जड़ तीन काली मिर्च के साथ लेने से मलरिया ठीक होता है।

अन्य रोग बवासीर, कमरदर्द, खूनी पेचिस, तपेदिक रोग में भी काली मिर्च के साथ देने से आराम मिलता है।

---

(४४) औषधि का नाम:–

बड़ी मटकटईयाँ, पंचरईया

उपयोगः–

पंचांग का रस बनाकर गर्म कुल्ला करने से दांत के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

बुखार में भी प्रयोग करें।

---

(४५) औषधि का नामः–

छोटी कटेरी व मटकटईया भी कहा जाता है।

उपयोगः–

खाँसी, दशमूल बुखार में

प्रयोग विधिः–

खाँसी में इसके पंचाग का काढ़ा या इसे जलाकर शहद के साथ दिन में तीन बार लेने से खाँसी में आराम मिलता है।

इसका उपयोग दशमूल तथा बुखार में भी किया जाता है।

---

(४६) औषधि का नामः–

कटई, सत्यानाशी व कहीं-कहीं रंगई व मिरमिटा भी कहा जाता है।

उपयोगः–

चर्म रोग में।

प्रयोग विधिः–

उपदंश में, इसके काढ़े का सेवन किया जाता है। छाजन, चिकोत्ता या एग्जिमा रोग में इसका दूध लगाया जाता है।

खुजलीः–इसकी जड़ का चूर्ण देने से खुजली में आराम मिलता है। इस रोग में इसके डंठल की साग भी खाई जाती है।

---

(४७) औषधि का नामः–

बनजीरा

उपयोगः–

पेशाब संबंधी रोग में लाभदायक है। संपूर्ण पौधा प्रयोग किया जाता है।

---

(४८) औषधि का नामः–

तेन्दू (झाड)

उपयोगः–

गर्भ निरोधक, इससे निकलने वाला गोंद

प्रयोग विधिः–

मासिक धर्म के समय, सुबह गोली बनाकर ठन्डे पानी के साथ पहले आठ दिन तक कोई बुरा प्रभाव न होने पर इसे एक से दो माह तक व स्थाई प्रभाव के लिये तीन माह तक दिया जा सकता है।

– झाड़ के कोमल पत्तों को कुचलकर या चबाचबा कर खाने से उल्टी दस्त बन्द हो जाते हैं। पीसकर पीने से अतिसार ठीक हो जाता है।
– इसके गोन्द को पानी में घिसकर आँखों में लगाने से नेत्र विकार (दोष) दूर हो जाते हैं। विशेषकर इसका अंजन करने से आँखे आना बन्द हो जाती है।

---

(४६) औषधि का नामः–

केऊ कादा, क्योर कादा

उपयोगः–

वात नाशक, पाती का रोग नष्ट करना।

प्रयोग विधिः–

इसे इमामदस्ते में कूटकर, सब्जी बनाकर खाया जा सकता है। 'यह भूंजकर शक्कर के साथ भी खाया जा सकता है।' इसे कच्चा भी खा सकते हैं।

---

(५०) औषधि का नामः–

बिदारी कन्द, बालाघाट मेमटाल, आटेर में बिदारीकन्द, रायपुर जिले कटवर वन्द, अलग-अलग जिलों में अलग-अलग नाम।

उपयोगः–

पौष्टिक दवाईयों में इसके कन्द का प्रयोग। बावासीर में इसे घिसकर लगाने से बावासीर नष्ट हो जाते हैं।

---

(५१) औषधि का नामः–

राज तम्बाकु, सहस्त्रमूली, महासतावरी, मयूरजुन्ती बालाघाट राम तूरवा।

उपयोगः–

मलेरिया, सफेद प्रदर, वातनाशक, खुजली, पेचिस–इन व्याधियों के साथ शरीर के घाव को भी भर देती है।

प्रयोग विधिः–

इसी जड़ का अर्क निकालकर देने से मलेरिया या जुड़ी बुखार ठीक हो जाता है। 'जड़ के रस को शक्कर के साथ देने से प्रदर रोग ठीक हो जाता है।' 'इसका सेवन वातनाशक है।' पेचिश में भी इसका उपयोग लाभप्रद होता है। 'यह चर्म रोग नाशक है।' घाव में इसे पीसकर लगाने से बड़ा घाव भी ठीक हो जाता है।

---

(५२) औषधि का नामः–

धाय, जिलबोली, धवाई।

उपयोगः–

शरीर में जले हुवे भाग पर होने वाले सफेद दाग मिटाने में। जलन में। रक्त प्रदर में। पेशाब में जलन व पीलापन दूर करने में।

प्रयोग विधिः–

अग्नि दग्ध में, इसकी जड़ का काढ़ा बनाकर पीने से अग्नि की जलन नष्ट हो जाती है।

जड़ को पीसकर लगाने से दाग मिट जाता है। 'रक्त प्रदर– इसके फूल को एक गिलास पानी में रात भर भीगों कर रखें, सबेरे इस गिलास के पानी को छानकर पिने से लाल प्रदर ठीक हो जाता है।' 'इसका प्रयोग २१ दिन तक किया जाय।' पेशाब में जलन इसका अर्क पीने से पेशाब की जलन व पीलापन दूर हो जाता है।

---

(५३) औषधि का नामः–

इन्द्रजो, कुटज, कुड़ाकोरिया, पौर्या, आयुर्वेदिक नाम **पूड़ा**–इन्द्रजो इसके फल का नाम है।

उपयोगः–

इसकी छाल, फूल तथा फल का उपयोग होता है। इसका उपयोग निम्नांकित व्याधियों को दूर करने में होता है। रक्तातिसार, कृमिनाशक, पेट दर्द, ज्वर व कान्स।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ या छाल का रस निकालकर लगाने से रक्तातिसार ठीक जाता है। 'इसके बीज का उपयोग कृमिनाशक, ज्वर नाशक व कफ नाशक होता है।'

---

(५४) औषधि का नाम:–

पित्त पापड़ा

उपयोग:–

रक्‍त पित्तनाशक जीर्ण ज्वर।

प्रयोग विधि:–

इसका सौरस के रस में पंचाग उपयोग होता है। चूर्ण को दूध के साथ पीने से रक्त पित्त खत्म होता है।

---

(५५) औषधि का नाम:–

कुकर दौना, कुकुरौंधा, कुकरदाना।

उपयोग:–

यह बावासीर नाशक है।

प्रयोग विधि:–

स्वरस को निकालकर घी व शक्कर में मिलाकर खाने से बावासीर ठीक हो जाती है।

---

(५६) औषधि का नाम:–

अमलवास, धतबहरे, भलमुषरी।

उपयोग:–

चर्मरोग, बिच्छू दंश, दस्तावर, बादीनाशक, एवं छाती घाव को भरने में भी अत्यधिक असरकारक औषधि है।

प्रयोग विधि:–

इसके गूदा का उपयोग रेचक के रूप में होता है। इससे बादी नष्ट होती है। 'बीज को पानी में घिसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने से बीज चिपकाकर सारा जहर (विष) खींच लेता है।' गूदे का अर्क–शक्कर के साथ मिलाकर पीठ या छाती के ऊपर के घाव पर लगाने से ठीक होता है। 'यह दस्तावर व बादीनाशक में इसका गूदा लाभप्रद है।'

---

(५७) औषधि का नाम:–

अंकवन, आक, अकौवा, कुडहर, छतनीमादार : अलग-अलग जिलों में इसे विभिन्न प्रकार के नामों से जाना जाता है।

उपयोगः–

इस औषधि का प्रभाव भिन्न प्रकार की बिमारियों में बहुत ही असर-कारक पाया गया। **विशेषकरः–**दीर्घ ज्वर नाशक, कुत्ते के काटने पर, गठियाबाद नाशक जोड़ों के दर्द में, सूजन व श्वांसरोग अर्थात दमा में भी यह लाभप्रद पाया गया। साथ ही यह दन्त रोग में भी उपयोगी है।

प्रयोग विधिः–

इसके फूल को पीसकर बेरी के बराबर गुड़ के साथ गोली बनाकर देने से असाध्य लम्बा जीर्ण ज्वर ठीक हो जाता है।

कुत्ते के काटने परः–जड़ की छाल पीसकर गुड़ के साथ देने से कुत्ते का जहर दूर हो जाता है। तथा पागलपन भी समाप्त हो जाता है।

गठियाबाद मेंः–इसकी जड़ की छाल को चने के साथ पकाकर छाल को अलग कर चने को सुखा लें, तत्पश्चात चने को पीसकर उसका बेसन बना लें। उस बेसन की रोटी खाने से गठियाबाद नामक रोग दूर हो जाता है। 'पीले पत्तों पर सरसों का तेल लगाकर, गर्म कर घुटने पर लगाने से भी गठियाबाद ठीक हो जाता है।'

श्वांस व दमा रोग मेंः–इसके फूल का कपड़पुर करके भस्म बनाकर गुड़ के साथ उपयोग करने से दमा रोग ठीक हो जाता है।

पुराने सिरदर्द मेंः–१०, १५ वर्षों से हो रहे सिरदर्द में इसका उपयोग बहुत ही असरकारक पाया गया है।

विधिः–इसके फूल पर लगे छोटे पाखड़े पत्ते को सूर्योदय के पूर्व तोड़कर लाएं, उन्हें मसलकर केप्सूल में भरकर या गुड़ के साथ मरीज को निगलवा दें। तीन दिन तक ऐसा करन से यह रोग हमेंशा के लिये नष्ट हो जाता है।

दन्त रोग नाशकः–इसकी जड़ को १००-१५० ग्राम लाकर साफ पानी से धो लें। इसे मोटा-मोटा कूट-कूट कर २ लीटर पानी में उबालें, इसे इतना उबालें कि इसका एक चौथाई शेष बचे, इसे ठण्डा करके छान लें। इस पानी से थोड़ी-थोड़ी देरी में कुल्ला करते रहें। पानी मुंह में भरकर मुँह को खूब चलावें। इस तरह पानी खत्म होने तक करें। इससे दांत में कमजोरी, दांतदर्द, सड़न, पीप पड़ना, खून आना आदि नहीं रहेंगी। साल में एक या दो बार करने से, दांत संबंधी कोई बीमारी नहीं होगी।

———

(५८) औषधि का नामः—

गुलर, दुमर, कुटुम्बर, क्षेत्रीय डूमर।

उपयोगः—

इसका उपयोग विभिन्न व्याधियों पर अपना प्रभाव डालकर उन्हें ठीक कर देता हैं। **विशेषकरः—**बाल तोड़व्रण (फोड़े) में, शूल में श्वेत प्रदर में, एवं अग्नि दाह में चेचक के दाने ठीक करने में व शुक्रवर्धक भी होता है। उल्टी बन्द करने में भी इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

व्रण में मवाद न भरने के लिएः—विधि—पत्ते के ऊपर जो मसूरिका निकलती है, उसे खिलाने से व्रण में मवाद नहीं भरता है। 'छोटे फलों को छाया में सुखाकर चूर्ण बनाकर, मिश्री के साथ देने से शूल ठीक होता है।'

प्रदर रोग मेंः—गूलर का दूध—आधा कप रोज पीने से प्रदर का रोग ठीक हो जाता है। 'इसकी छाल के स्वरस को पीने से उल्टी नहीं होती।'

अग्निदाहः—फल को पीसकर लगाने से अग्निदाह ठीक हो जाता है।

चेचक मेंः—इसके पत्तों में चने या मसूर के आकार के दाने होते हैं। उन्हें पीसकर चूर्ण बनाकर खिलाने से, चेचक के दाने बैठ जाते हैं।

शुक्र वर्धकः—नरम व कोमल फल को सूखाकर पीसकर मिश्री के साथ देने से शुक्र वर्धक होता है।

बाल तोड़ मेंः—बालतोड़ में इसके दूध का प्रयोग होता है। इसके दूध को कागज या पत्ते मे लेकर बालतोड़ के स्थान पर लगाने से वह बैठ जाता है।

---

(५९) औषधि का नामः—

कंधुर या बन हल्दी।

उपयोगः—

वातनाशक व पेशाब की जलन को दूर करती है।

प्रयोग विधिः—

इसका कन्द वातनाशक है। इसे छीलकर धोकर साफ करके खाने से वात नष्ट हो जाता है। 'इसके फूल को पीसकर पिलाने से पेशाब की जलन दूर हो जाती है।'

---

(६०) औषधि का नामः—

द्विमोगी।

उपयोगः–

वातनाशक (पंचांग उपयोग)

प्रयोग विधिः–

इसके पंचांग का उपयोग होता है। यह वातनाशक है।

-----

(६१) औषधि का नामः–

महानींम।

उपयोगः–

चर्मरोग नाशक, पेचिस बंद, मवेशी रोगों में भी इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

चर्मरोगः–इसकी छाल के रस का उपयोग किया जाता है। छाल का अर्क निकालकर फोड़ें, फुन्सी, खाज खुजली में किया जाता है। 'छाल के स्वरस का उपयोग पेचिस में आता है।' इसकी छाल के चूर्ण को मट्ठा के साथ देने से पशुओं का अतिसार दूर हो जाता है।

-----

(६२) औषधि का नामः–

पापड़ी, केवरी (पापड़ी बालाघाट जिले में) व (केवड़ी नाम रायपुर जिले में कहा जाता है)

उपयोगः–

श्वेत प्रदर, सिरदर्द, एवं चर्मरोग (सफेद धात) में किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसके छाल के रस को शक्कर के साथ मिलाकर देने से श्वेत प्रदर आना बन्द हो जाता है। 'इसके बीज के तेल का उपयोग सिर दर्द में किया जाता है। इसको लगाने से सिरदर्द जाता रहता है।

बीज के तेल का उपयोगः–एक्जिमा व अन्य चर्म रोगों में लगाने से जल्दी आराम पहुँचाता है।

-----

(६३) औषधि का नामः–

अनन्तमूल, खापरखाड़ी तथा **छापरनार।**

उपयोगः–

यह निम्नांकित व्याधियों में काम आती है। गंजापन दूर करने, कान की सनसनाहट, महिलाओं का दूध बढ़ाने एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु इसका उपयोग किया जा सकता है।

प्रयोग विधिः–

गंजापन दूर करनाः–इसकी जड़ को घिसकर सिर में लगाने से गंजापन दूर हो जाता है।

कान की सनसनाहटः–इसकी जड़ चूसने से कान की सनसनाहट दूर हो जाती है।

माँ की दूध वृद्धि में सहायकः–जड़ को दूध में पकाकर खाने से महिलाओं का दूध बढ़ जाता है।

स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिएः–इसको सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ जाती है।

---

(६४) औषधि का नामः–

तीन पनिया या चिकारी।

उपयोगः–

टूटी हड्डी को जोड़ने में।

प्रयोग विधिः–

इसे कूट पीसकर इसकी लुगदी बनालें, लुगदी को दूध में पकाकर टूटी हुई हड्डी पर इसका लेप लगा दें। बचे हुए दूध को रोगी को पिला दें। इस तरह करने से टूटी हुई हड्डी १०-१५ दिन में जुड़ जाती है।

---

(६५) औषधि का नामः–

जलजामुनः कुछ जिलों में इसे फेनी (छोटी) भी कहते हैं।

उपयोगः–

श्वेत प्रदर, धातु पुष्टि एवं चर्मरोग।

प्रयोग विधिः–

इसके स्वरस को शक्कर के साथ सेवन करने से धातु का पतलापन दूर होकर पुष्ट होती है, तथा सफेद धात जाने की बीमारी दूर हो जाती है।

चर्मरोग मेंः–जलजामुन के बीज को रात भर पानी में भीगा रहने दें, प्रातः इनको पीस कर फोड़े, फुन्सी खाज, खुजली पर लगाने से ठीक हो जाते हैं।

---

(६६) औषधि का नामः–

चिरोटी, चक्रमर्द।

उपयोगः–

पौष्टिक आहार, पेट दर्द व चर्मरोग।

प्रयोग विधिः–

इसका सेवन करने से शरीर हृस्ट-पुष्ट होता है। इसकी भाजी खाने से पेटदर्द दूर हो जाता है। इसके बीज को पानी में भीगों कर पीस लें। तद्पश्चात इसे चर्मरोग पर लगाने से लाभ होता है।

---

(६७) औषधि का नामः–

सभी क्षेत्रों में इसे **बेल** नाम से जाना जाता है।

उपयोगः–

ज्वर उतारने में, पेचिस, हड्डी बुखार, नपुंसकता एवं धातु विकार में भी इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

इसके बीज का चूर्ण देने से बुखार उतर जाता है पेचिस रोग में इसके गूदे का सेवन करने से पेचिस ठीक हो जाती है। "इसके पत्ते का रस व गोजिया चाय उबालकर, गुड़ के साथ देने से हड्डी बुखार ठीक हो जाता है। इसके पत्ते का रस शहद में मिलाकर लेप लगाने से नपुंसकता दूर होती है। 'इसका पंचांग रस बनाकर देने से धातु विकार दूर होतें हैं।' छाल के स्वरस से प्रदर रोग ठीक होता है। साथ ही गर्मी व पेट विकार में भी लाभप्रद है।

---

(६८) औषधि का नामः–

बरगद, बड़ (वट)

उपयोगः–

कै (उल्टी), धातु पुष्टि में, बच्चों के दस्त बन्द करने में व घाव भरने में भी इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

बरगद की जटा व सुपारी को जलाकर, भस्म बनाकर शहद के साथ देने से उल्टी बन्द हो जाती है। 'इसका दूध बताशे के साथ देने से धातु पुष्ट होकर सफेद धातु जाना बन्द हो जाती है।' अतिसार में इसका दूध छोटे बच्चों की नाभी में लगाने से अतिसार बन्द हो जाते हैं। 'इसकी जटा के कोमल भाग को गुड़ के साथ खिलाने से बड़े फोड़े के घाव भर जाते हैं।

---

(६६) औषधि का नामः–

आयुर्वेद में **अपामार्ग** तथा क्षेत्रिय भाषा में **चिड़चिड़ा लटजीरा** व **डंगा** के नाम से जाना या पुकारा जाता है।

उपयोगः–

कुत्ते का जहर उतारने, बिच्छू दंश, श्वांसरोग, प्रसव पीड़ा, प्रसव कारक, भूख मारने, चर्मरोग, कमर व गले के घाव में, पानी शुद्धता व गहरे घावों को भरने में उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

जड़ को कच्चा खिलाने से कुत्ते का जहर उतर जाता है। यदि कुत्ते ने तुरन्त काटा हो तो इसे जड़ से उखाड़कर धो लें, तथा जड़ काटकर चबाते जाएं, इससे कुत्ते का जहर उतर जाता है। 'जड़ बिच्छू दंश में भी उपयोगी है। जड़ को पीसकर, पचांग की लुगदी बनाऐं, तथा जहाँ काटा है व जहर चढ़ा है, वहाँ इसके तिनके से एक रेखा बनाएं तथा उसी जगह पर लुगदी बांध दें, बिच्छू का जहर उतर जायेगा।

श्वांस रोग मेंः–इसकी पंचांग भस्म देने से श्वांस की बीमारी दूर हो जाती है। दिन में तीन बार स्वाद के साथ थोड़ी-थोड़ी देनी चाहिए।

प्रसव पीड़ा व प्रसव मेंः–यदि कोई महिला, बहुत दिनों से प्रसव के दर्द से परेशान हो तो उस महिला के सिर की त्वचा में छुआने से तत्काल प्रसव हो जाता है।

सावधानीः–प्रसव होने के तुरन्त बाद हटा लेना चाहिये, अन्यथा आंते बाहर हो सकती है। बाद में इसे तालाब में डाल दें। 'इसके बीज की खीर खाने से भूख मर जाती है। इसके सेवन के पश्चात काफी समय तक बिना खाये भी रहा जा सकता है।' इसके बीज जलाकर भस्म बना लें, उसे सरसों या नारियल के तेल में मिलाकर लेप बनाएँ इसे चर्मरोग विशेषकर कमर व गले के चर्मरोग व घाव ठीक हो जाते हैं।

अपामार्ग की छाल का उपयोगः–पानी की शुद्धता के लिये भी किया जाता है।।

गहरे घावों मेंः–इसका पंचांग कूट पीसकर लुगदी बनाकर उसका तेल-पाक करें। इस तेलपाक के बाद लुगदी बाहर निकाल लें, तब इस तेल का उपयोग १०-१५ वर्षों के घाव पर लगावें। मात्र २१ दिन में चाहे जैसा घाव ठीक हो जावेगा।

---

(७०) औषधि का नामः–

बड़ी दूधि, दूधिया ।

उपयोगः–

शोथ (सूजन) में, महिलाओं के स्तन से दूध आने में सहायक, चर्मरोग, व मसूड़ा निरोग करने में इसका उपयोग किया जाता है ।

प्रयोग विधिः–

सूजन उतारने के लिए इसकी भाजी को खिलाया जाता है । तथा स्वरस पान से भी शोथ ठीक हो जाता है । 'जिन महिलाओं के स्तन से दूध नहीं आता उन्हें इसकी जड़ का रस दिन में ३ बार देने से दूध आने लगता है ।' 'छाल का चूर्ण सिर में लगाने से छोटी-छोटी फुन्सियाँ मिट जाती है ।' 'इसकी टहनी का दतौन करने से दांत मजबूत व मसूढ़े निरोग होते हैं ।'

-----

(७१) औषधि का नामः–

पुरलू (कुरलू) सरगुजा जिले में, तथा कुछ भागों में **गिधोन, कौआ व गुडेल** भी कहते हैं ।

उपयोगः–

पेचिस व धातु पुष्ट कारक है ।

प्रयोग विधिः–

इसके गोंद को खिलाने से १० दिन में पेचिस ठीक हो जाती है पहले इसका चूर्ण बनाकर खिलाएं फिर पानी दें । 'यह धातु को पुष्ट भी करती है ।'

-----

(७२) औषधि का नामः–

"महूआ" ।

उपयोगः–

पेटदर्द बन्द करने में तथा श्वांस रोग में, दमा, शुक्रवर्धक, कै बन्द करने के उपयोग में आता है ।

प्रयोग विधिः–

छाल का रस चूसने से पेट दर्द बन्द हो जाता है । 'छाल के रस सेवन करने से श्वांस रोग ठीक होते हैं । दिन में एक-एक चम्मच ३ बार लेने से दमा रोग एक सप्ताह में ठीक हो जाता है ।' 'इसकी छाल का चूर्ण मिश्री के साथ देने से यह शुक्र वर्धक होता है ।' महूआ और आम की छाल का रस मिलाकर देने से उल्टी बन्द हो जाती है ।'

-----

(७३) औषधि का नामः–

अर्जुन, क्षेत्रिय नाम कछुआ।

उपयोगः–

हृदय रोग, बेवची एवं सिर के घाव की खुजली में एवं दतौन का उपयोग, दांत की मजबूती में।

प्रयोग विधिः–

हृदय की धड़कन मेंः–इसकी छाल का रस निकालकर देने से हृदय की धड़कन दूर होती है एवं अन्य हृदय रोगों में छाल के रस का सेवन किया जाता है। 'इसकी छाल को कूट पीसकर काढ़ा बनायें, काढ़े का लेप पैर की बेवची में लगाने से बेवची दो दिन में दूर हो जाती है।' इसकी दतौन करने से दांत मजबूत होता है। सिर के घाव में छाल का चूर्ण बनाकर लगाने से खुजली दूर होती है।

---

(७४) औषधि का नामः–

वन तुलसी।

उपयोगः–

पैरों में पसीना आना एवं धातु पुष्टि कारक व वीर्य वर्धक है।

प्रयोग विधिः–

इसके बीज को पीसकर रोज तीन ग्राम मात्रा लेकर पीने से पैर के तलवों में पसीना आना बन्द हो जाता है। 'इसके बीज का चावल धातु पुष्टि कारक व वीर्य वर्धक है। इसकी रोटी बनाकर सेवन करते हैं।'

---

(७५) औषधि का नामः–

पीपल, बड़ा पीपल।

उपयोगः–

सर्पदंश, गर्भधारक, सिरदर्द, पतले दस्त, अतिसार, घाव भरने, में बहरापन दूर करने में।

प्रयोग विधिः–

सर्पदंश मेंः–इसका उपयोग सर्पदंश में होता है। इसकी एक ऐसी टहनी जिसमें ६० पत्ते हो ये ताजे पत्ते हों। इस उपाय में ५-६ तगड़े आदमी की आवश्यकता पड़ती है। २ व्यक्ति हाथ पकड़ने में २ व्यक्ति पैर सम्हालने तथा १ व्यक्ति सिर को मजबूती से पकड़ने हेतु, पहले ६० ताजे पत्ते अपने पास रख लें।

विधिः–छठा आदमी सावधानी पूर्वक पीपल पत्ते के डंठल को दोनों कान के अन्दर आहिस्ता-आहिस्ता डालें, परन्तु ध्यान रहे कान के परदे से डंठल न टकराये। एक दो मिनट कान में रखकर बाहर निकालकर ठीक से रखें। इसी क्रम में ३० बार में ६० पत्तों को कान के अन्दर प्रवेश करें, और निकालकर गहरे गड्डे में गाड़ दें या जलाकर नष्ट कर दें, चूंकि इन पत्तों में विष होता है एवं विषाक्त होता है।

गर्भधारकः–इसके फल कूटकर खाने से जिस किसी महिला को गर्भ धारण नहीं होता है, उसे गर्भ धारण हो जाता है। यह औषधि ४० दिन तक सेवन करें।

सिरदर्दः–इसकी कोपल या कोमल पत्तियाँ पीसकर खाने से सिरदर्द दूर हो जाता है।

पतले दस्त अतिसार मेंः–पीपल का अवर्तछाल रस से पतले दस्त व अतिसार मात्र ३ खुराक में ठीक हो जाते हैं।

घाव भरने मेंः–इसके ऊपर की छाल को पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को कपड़ छान कर लें, यह चूर्ण घाव पर लगाने से बहुत जल्दी आराम हो जाता है।

बहरापन मेंः–पेड़ के सात पत्तों का रस निकालकर कान में डालने से, कान का बहरापन दूर हो जाता है।

---

(७६) औषधि का नामः–

बला क्षेत्रिय नाम **चिकारी, चिकनी बलियारी**

उपयोगः–

धातु की बीमारी, फोड़े को पकाने में, हड्डी जोड़ने में, कमर दर्द में।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्ते के रस को प्रतिदिन आधा कप शक्कर के साथ देने से धातु की बीमारी दूर हो जाती है।

फोड़ा पकाने मेंः–इसके पत्ते की लुगदी को फोड़े पर लगाने से तुरन्त पक जाता है। यदि पकने लायक नहीं है तो तुरन्त बैठ जाता है।

हड्डी जोड़ने मेंः–इसकी पत्ती का रस लहसून के साथ पीसकर आटे के साथ, हड्डी टूटे स्थान पर इसका लेप करके पट्टी बांध दें, ऐसा करने से हड्डी जल्दी जुड़ जाती है। इसकी जड़ का रस पीने से कमर दर्द ठीक होता है।

---

(७७) औषधि का नामः–

खरेंटी, इसे **बिलयारी** भी कहा जाता है।

उपयोगः–

श्वेत प्रदर, कुत्ते काटे का जहर दूर करने में।

प्रयोग विधिः–

श्वेत प्रदर मेंः–इसके जड़ के रस को शक्कर के साथ देने से सफेद प्रदर ठीक होता है। खरेंटी की जड़ तथा चिट्टा याने अपामार्ग के जड़ का रस मिलाकर देने से कुत्ते काटे का जहर दूर होता है। 'इससे पीलिया भी ठीक होता है।'

---

(७८) औषधि का नामः–

पाताल कुम्हड़ा विदारिक।

उपयोगः–

गठियाबाद, नपुंसकता, शारीरिक दुर्बलता, अर्थात पोष्टिक आहार के लिये भी अन्य व्याधियों के साथ उपयोगी पाया गया।

प्रयोग विधिः–

गठियाबाद में, इसके कंद को घिसकर बारीक चूर्ण को शुद्ध घी में सेककर, इसका इस्तेमाल या सेवन, शक्कर के साथ रोज खाएं। 'इसका सेवन २१ दिन तक करें।' 'गठियाबाद अधिक पुराना होने पर इसका अधिक दिनों तक सेवन किया जा सकता है।'

नपुंसकता मेंः–एक कंद को घिसकर चूर्ण बना लें। उस चूर्ण का रस निकालकर, उसकी सात बार भावन देकर, उसे दूध के साथ उपयोग करने से नपुंसकता दूर होती है।

पौष्टिक आहारः–पौष्टिक दवाईयों में भी इसका उपयोग होता है। इसके चूर्ण को अन्य दवाईयों तेजराज मूसली, कुम्हार कांदा मिलाकर दूध के साथ फांकने से यह पौष्टिक होता है।

---

(७९) औषधि का नामः–

सेमरकन्द, सेमल सुमल।

उपयोगः–

गर्भ निरोध, श्वेत एवं रक्त प्रदर, गर्भपात, दांत का दर्द, आंव दस्त, अतिसार, धातुवर्धक, धातुपुष्टि आदि व्याधियों में उपयोगी पाया गया है।

प्रयोग विधिः–

गर्भ निरोधकः–इसके कंद को अच्छी तरह कूटपीसकर चूर्ण बनावें, साथ ही बांस के फूल का चूर्ण बनाएं, दोनों को अच्छी तरह फेंट लें, एक बोतल में भरकर बन्द कर लें और दो-तीन दिन तक उसे हिलाते रहें और उसे बन्द ही रखें। उसके बाद उसे एक कप भरकर प्रतिदिन के हिसाब से ५ दिन तक देना है, मासिक स्राव के समय लगातार दें। इससे गर्भ धारण नहीं होता है।

गर्भपात में:–यदि गर्भधारण को गर्भपात कराना हो तो ऊपर दिये गये प्रयोग को गर्भवती स्त्री को अमल में लाये तो गर्भपात हो जायगा।

रक्त श्वेत प्रदर में:–इस कन्द का गोंद होता है। उसे मोचरस कहते हैं। मोचरस को पीसकर चांवल की धोवन के साथ देने से लाल प्रदर, श्वेत प्रदर ठीक हो जाता है।

दांत के दर्द में:–मोचरस व फिटकरी दोनों को मिलाकर देने से दांत दर्द दूर हो जाता है।

आंव दस्त अतिसारः–सेमल की छाल के रस को मिश्री के साथ देने से आंव दस्त अतिसार, ठीक हो जाते हैं।

धातु वर्धकः–सेमल की जड़ के चूर्ण को शक्कर के साथ खाने से धातु-वर्धक व वीर्यपुष्टि होता है।

सफेद प्रदरः–सेमल कंद के फूल को सेंधा नमक के साथ घी में तलकर सब्जी खाने से सफेद प्रदर दूर होता है।

---

(८०) औषधि का नामः–

हंसली कन्द, हंसिया डाकर।

उपयोगः–

फोड़ा ठीक करने में मवेशी की टंगियाँ बीमारी में एवं वातनाशक में।

प्रयोग विधिः–

शरीर में व्रण होने में इसे पीसकर लगाने से व्रण ठीक हो जाता है। 'जानवरों की टंगिया बीमारी में उसे कूटपीसकर जहाँ सूजन हो वहाँ लगाने से टंगिया बीमारी ठीक हो जाती है।'

वातनाशकः–इसका कंद वातनाशक है। इसके चूर्ण के साथ हाथी कंकण मिलाकर इसका चूर्ण प्रतिदिन ३ ग्राम की खुराक दिन में ३ बार लेने से वातनाश हो जाता है।

---

(८१) औषधि का नामः–

जंगली सूरन, स्थानीय नाम रायपुर जिले में **हिर मिश्री कंद ।**

उपयोगः–

शोथ, आमवात, उदर विकार, एवं बवासीर एवं मवेशी में गलघोंटू की बीमारी में ।

प्रयोग विधिः–

शोथ मेंः–इसे घिसकर शोथ पर लगायें, इसे कुछ दिनों तक लगाने से शोथ की बीमारी ठीक हो जाती है ।

उदर विकार एवं बवासीर मेंः–इस कंद को पीसकर चूर्ण बना लें और गुड़ के साथ चने की मात्रा के बराबर रोज खिलाने से उदर विकार, बवासीर व इसके मस्से मिट (नष्ट) जाते हैं ।

गलघोंटूः–इसका चूर्ण बनाकर मवेशी को खिलाने से गलघोंटू की बीमारी ठीक हो जाती है ।

---

(८२) औषधि का नामः–

औधी

उपयोगः–

गले में केंसर का फोड़ा या व्रण महिलाओं की थनवटी, कमर की खुजली व चमत्ते में ।

प्रयोग विधिः–

गले के व्रण मेंः–गले के पास केन्सर का फोड़ा होता है, उस पर औधी की लुगदी गरम करके लगाने से वह फोड़ा बैठ जाता है । 'थनवटी में महिलाओं के थन में थनोटी या सुजाक होने से दूध नहीं निकलता है, इसकी लुगदी गरम करके लगाने से वह शोथ ठीक होकर दूर हो जाती है ।' इसके पंचांग को कूटपीस कर लुगदी बना लें, तथा गरम करके चकते व खुजली पर लगाने से यह कमर रोग को ठीक कर देती हैं ।

---

(८३) औषधि का नामः–

राम दतौन, शेरदतौन ।

उपयोगः–

सफेद आंव, एवं प्रदर में उपयोगी है ।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ का रस शक्कर के साथ सौंफ, मिलाकर देने से सफेद आंव ठीक हो जाता है। आंव जिस रंग के हों जड़ उसी रंग की निकालकर देवें।

प्रदर रोग में:–जिस रंग का प्रदर हो उसी रंग की जड़ का रस शक्कर के साथ मिलाकर देने से प्रदर रोग ठीक हो जाता है।

---

(८४) औषधि का नामः–

छोटी सामरभंज।

उपयोगः–

परसिता, ठण्डापन।

प्रयोग विधिः–

प्रसव के बाद अगर महिला में ठण्डापन आ जाय तो इसके जड़ के रस को, आधा गरम पानी व ठण्डा पानी (मच्या) करके देने से यह दोष जाता रहता है।

---

(८५) औषधि का नामः–

बगडूर, बगडाली, बादी, संहाड़।

उपयोगः–

पाठाघाटा, इसे कैंसर भी कहते हैं, कान दर्द, कान बहना, बहरापन, बच्चों में जालंधर।

प्रयोग विधिः–

पाठाघाटा जो पीठ या छाती पर होता है इसे कैंसर भी कहते हैं। इसे पीसकर गरम लेप लगाने से ठीक होता है। 'इसकी जड़ को जला कर तेल में मिलाकर डालने से कान का बहना, बहरापन दोनों ठीक होते हैं।'

'बच्चों में जालंधर होने पर जड़ को पीसकर पिलाने से पानी बाहर आ जाता है।' विष को पेट में से निकालने में भी इसका उपयोग होता है। इसकी जड़ को पीसकर मुंह से चाटने या पानी में घोलकर पीने से पेट में गया जहर बाहर निकल जाता है, वह ठीक हो जाता है।

---

(८६) औषधि का नामः–

हुल-हुलिया या **उलउलिया।**

उपयोगः–

मलेरिया, ज्वर नाशक।

प्रयोग विधिः–

विशेषताः–यह मलेरिया की रामबाण दवा है। इसका उपयोग करने से यदि मलेरिया एक बार भाग गया तो दूसरी बार फिर कभी नहीं होता है।

विधिः–इसकी पत्तियों का रस या पंचांग काढ़ा बनालें। यह रस दो चम्मच के हिसाब से प्रत्येक २ घण्टा में, ज्वर आने के बाद से लेकर ज्वर चढ़ने के पूर्व तक ३ दिन तक लेने से यह हमेंशा के लिए चला जाता है।

---

(८७) औषधि का नामः–

लोकपाल–सरगुजा जिले में इसकी खोज प्रेमनगर के वैद्य लोकपाल भाई ने की है और सात मामलों में इस औषधि का सफल प्रयोग किया है, इस औषधि के अन्य नाम डोटोकोंदा व डोकर बेला भी हैं।

उपयोगः–

इसका उपयोग हड्डी जोड़ने में किया जाता है।

प्रयोग विधिः–

हड्डी के टूटे भाग को थोड़ा खरोंच कर इस दवाई की अच्छी लुगदी बनाकर उस पर लेप कर दें। ऊपर से पट्टी बांध दें। ढ़ाई दिनों (२।।) में पट्टी थोड़ी-सी खोल दें, परन्तु पूरी न खोलें। लगभग १५ दिनों में टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है और रोगी चलने फिरने लायक हो जाता है।

---

(८८) औषधि का नामः–

बांस का अंकुर।

उपयोगः–

गहरे घाव एवं मूत्रावरोध।

प्रयोग विधिः–

गहरा घाव ठीक करने मेंः–इसे कुचलकर इसका गूदा निकाल लें, और सेम की बेला के डंठल को कुचलकर उसे ठीक से चूने में मिला दें। उसे हाथ से रगड़कर घाव में भर दें, तथा पट्टी बांध देंवे। घाव बहुत जल्दी ही ठीक हो जावेगा।

मूत्रावरोध व निरोगः—इसके टुकड़े-टुकड़े कर सुखा लें, सूखे का चूर्ण बनाकर सफेद कद्दू के पानी में भिगों दें और पुरानी ककड़ी (खीरा) के बीच के अन्दर से गूदे को निकालकर मिलाकर इसे शक्कर के साथ देने से इससे मूत्रावरोध, ठीक होता है।

---

(८६) औषधि का नामः—

रोहिना छाल।

उपयोगः—

दर्दनाशक, व चोट, मोच व सूजन में आराम पहुँचाती है।

प्रयोग विधिः—

इसकी छाल को कूटकर, पानी में डालकर क्वाथ बनाएं अर्थात ४ लीटर पानी को धीमी आंच में इतना उबालें कि आधा उबलने के बाद १०० ग्राम हल्दी डाल देंवे, तब उसको मिलावें। बची हुई हल्दी को शरीर में दर्द के स्थान पर लेप कर दें।

---

(९०) औषधि का नामः—

बच, बच्छ।

उपयोगः—

अतिसार, पेचिस, आवाज साफ करने हेतु, स्मरण शक्ति वर्धक, सन्नीपात, ज्वर नाशक एवं बच्चों के कृमि रोग में भी इसका उपयोग किया जाता है।

प्रयोग विधिः—

अतिसार व पेचिस मेंः—छोटे बच्चों को उम्र के हिसाब से इसे पीसकर चांवल के आकार में माँ के दूध के साथ में दें। 'कन्ठ की आवाज साफ करने में भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।' इसे दूध के साथ पीसकर लेने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

इसे पीसकर सरसों के तेल के साथ फेंट कर हाथ पैर में मालिस करने से सन्नीपात व तापमान ठीक होता है।

कृमि नाशकः—कृमि पर भी इसका उपयोग होता है।

---

(९१) औषधि का नामः—

मंदा, बुन्दरा सरगुजा में।

उपयोगः—

चोट मोच, सूजन, मवेशी की तन्दुरूस्ती में।

प्रयोग विधिः—

इसका बड़ा पेड़ होता है पेड़ का नाम मैदा है। इसकी छाल को कूट पीसकर लेप करने से चोट, मोच व सूजन में ग्राराम होता है। 'मवेशी' के लिये मैंढ़े की छाल को पीसकर उसकी भस्म बना लें, तथा कमजोर मवेशी को मोटा ताजा बनाने के लिये उसे भस्म की चूरी, भूसी के साथ देने से उसकी तन्दुरुस्ती में सुधार होता है।'

---

(६२) औषधि का नामः—

मसबन्दी कन्दी (कंदी)

उपयोगः—

हड्डी को जोड़ने में।

प्रयोग विधिः—

यह विशेषकर जानवर की हड्डी जोड़ने में बहुत उपयोगी ग्रौषधि है।

इसे ग्रच्छी तरह कुचलकर इसका ग्रच्छा लेप करके पट्टी बांध दें, तो बहुत जल्दी टूटी हड्डी जुड़ जाऐगी।

---

(६३) औषधि का नामः—

रक्त विहार, रक्त जड़ी।

उपयोगः—

प्रसव के बाद रक्त शुद्धि करना एवं बन्द मासिक धर्म को चालू करने के लिए।

प्रयोग विधिः—

महिलाग्रों में प्रसव के बाद खून साफ करने के लिए जड़ को कूटकर काढ़ा बनाकर पिलाने से रक्त शुद्ध होता है, व प्रसव के बाद होने वाली कमजोरी को भी दूर करता है। इस काढ़े का ३ दिन सेवन करने से बन्द मासिक धर्म खुल जाता है।

---

(६४) औषधि का नामः—

महाजाल, महाजटा, बंधमुछ, जटाशंकर।

उपयोगः—बेवची (रेवची) एक्जिमा।

प्रयोग विधिः—

पंचांग को जलाकर भस्म बना लें, उसे नारियल के तेल में फेट लें, फेंटकर बेवची में लगाने से समूल नष्ट हो जाती है।

---

(९५) औषधि का नामः–

दशमूल, शतावरी।

उपयोगः–

रक्त शोधक, वीर्यवर्धक, धातुपुष्टि कारक, दुग्धवर्धक, पौष्टिक आहार भी है।

प्रयोग विधिः–

पौष्टिक आहार के संग में इसका उपयोग होता है। साथ ही इसके सेवन से धातुपुष्टि कर वीर्य बढ़ाती है। रक्त शुद्धिकरण भी होता है, एवं विभिन्न औषधियों के साथ मिलाकर इसका उपयोग होता है।

---

(९६) औषधि का नामः–

पाट काढरी।

उपयोगः–चर्मरोग में।

प्रयोग विधिः–

इसमें पंचांग को जलाकर या भस्म बनाकर नारियल के तेल में फेंट लें। इस मल्हम को पुराने से पुराने चर्मरोग व हर तरह की दराद में ५-६ दिन तक लगाने से ठीक हो जाती है।

---

(९७) औषधि का नामः–

लताकरंज, गटारन, सागरगोटा।

उपयोगः–कृमिनाशक एवं बवासीर में।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्ते व बांस के पत्तों का रस मिलाकर पिलाने से बच्चों के कृमि नष्ट हो जाते हैं। गटारन के गूदे का भाग तीन दिन तक (प्रतिदिन एक बार) खिलाने से बवासीर का रोग दूर हो जाता है।

---

(९८) औषधि का नामः–

डिकामाली।

उपयोगः– कृमिनाशक।

प्रयोग विधिः–

इसका गोंद पीसकर, बच्चों को मसूर के दाने के बराबर खिलाने से कृमि नष्ट हो जाते हैं।

---

(९९) औषधि का नामः–

शीकाकाई ।

उपयोगः–

सिर का गंजापन दूर कर बालों को घने व काले बनाने में ।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्तों को पीसकर लगाने से बाल काले और गहरे हो जाते हैं, एवं गंजापन दूर हो जाता है ।

---

(१००) औषधि का नामः–

काली मूसली ।

उपयोगः–

धात पुष्टिकारक एवं नपुंसकता में उपयोगी ।

प्रयोग विधिः–

इसको कांदे के साथ खिलाते हैं ।

---

(१०१) औषधि का नामः–

भिरहा ।

उपयोगः–

कृमिनाशक एवं सड़े-गले घावों को भरना ।

प्रयोग विधिः–

इसकी पत्तियों का चूर्ण बनाकर सड़े-गले घाव में लगाने से जल्दी ठीक हो जाता है । एवं कृमि नाशक भी है ।

---

(१०२) औषधि का नामः–

भोजराज ।

उपयोगः–

नपुंसकता में ।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को लगातार २१ दिन तक खाने से नपुंसकता दूर होती है । यह इस रोग की असरकारक दवाई है ।

---

(१०३) औषधि का नामः–

बनतिखुर, बनति कुर ।

उपयोगः–

पेशाब की जलन में, गर्मी में शरबत बनाकर पीने में ।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को खोदकर, साफ धोकर कूट लें, तथा इसे २।। (ढाई दिन) पानी में डूबा रखने के पश्चात निकाल लें, बाद में इसका सेवन करने से पेशाब की जलन दूर हो जाती है । 'गर्मी में इसका शरबत बनाकर पीने से ठंडाई तथा तरो ताजगी मिलती है ।

---

(१०४) औषधि का नामः–

गौरख मुड़ी ।

उपयोगः–

रक्त शुद्धिकरण में ।

प्रयोग विधिः–

इसके पंचांग का काढ़ा बनाकर पीने से रक्त शुद्धि होती है । तथा चर्मरोग व खृन की खराबी दूर करने में सहायक है ।

---

(१०५) औषधि का नामः–

पेड़ी मुर्री, ऐंटी मुर्री ।

उपयोगः–

पेचिस, अतिसार एवं आंव में ।

प्रयोग विधिः–

इसकी फली को कूट पीसकर पिलाने से आंव, पेचिस, तथा अतिसार में लाभ दायक है ।

---

(१०६) औषधि का नामः–

भंवरमार ।

उपयोगः–

सर्पदंश एवं चर्मरोग ।

विशेषताः—यह जहरीले सांप के काटने वाले विष के लिए राम बाण दवा है ।

प्रयोग विधिः–

इसकी जड़ को पीसकर नाक में रखकर जोर-जोर से स्वांस लेवें तो कुछ देर में सर्प का जहर अपने आप शांत हो जाता है।

चर्मरोगः–इसके जड़ व बीज को पीसकर हल्दी में लेकर लेप लगाने से चर्मरोग दाद, खाज, खुजली आदि दूर होते हैं।

---

(१०७) औषधि का नामः–

पोराकंद, कोराकंद।

उपयोगः–

पेटदर्द में।

प्रयोग विधिः–

इस कंद को कूट पीसकर खिलाने से पेटदर्द तुरन्त शांत हो जाता है।

---

(१०८) औषधि का नामः–

छ्रियाकंद, घन हल्दी।

उपयोगः–

बलवर्धक, पौष्टिक, वीर्यवर्धक है।

प्रयोग विधिः–

इसका पूरा पंचांग काम में लाया जाता है। इसके सेवन से धातु पुष्ट होकर शरीर को मजबूत बनाने में सहायक है।

---

(१०९) औषधि का नामः–

घोरब्रज (घोड़बज्व)

उपयोगः–

स्मरण शक्ति बढ़ाने में।

प्रयोग विधिः–

इसे कूटपीस कर सुबह शाम शक्कर के साथ एक गिलास पानी में धोएं। इसके सेवन से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

---

(११०) औषधि का नामः–

केवाच या **केमास** का जड़।

उपयोगः–

वीर्यवर्धक, बाजीकरण में एवं कृमिनाशक है।

प्रयोग विधिः–

इसके बीज वीर्यवर्धक एवं पौष्टिक पदार्थ बनाने के काम में आते हैं। 'इसकी जड़ को पिलाने या खाने से बाजीकरण होता है।' केवाच की पूली के ऊपर के रोएं को गुड़ में लपेट कर देने से पेट के लम्बे-लम्बे कृमि बाहर निकल आते हैं।

---

(१११) औषधि का नामः–

गेन्दा या गोदा।

उपयोगः–

सिर फट जाने पर एवं असाध्य घाव को ठीक करने में।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्ते का रस निकालकर कटे भाग पर रूई के फोहे का बताशा बनाकर लगाने से कटा हुआ भाग ठीक हो जाता है।

---

(११२) औषधि का नामः–

धनदिया या डर्डानिया।

उपयोगः–

छाती के दर्द में।

प्रयोग विधिः–

इसके बीज को पीसकर एवं बारहसिंगा को घिसकर, दोनों को एकमेक अर्थात फेंट कर थोड़ा गरम करके लगाने से सीने का दर्द ठीक हो जाता है।

---

(११३) औषधि का नामः–

गुन्डरू, गुंडरू।

उपयोगः–

घाव व फोड़े में।

प्रयोग विधिः–

थनोटी के घाव पर पीसकर गरम करके लगाना चाहिए, इससे महिलाओं के थनों में होने वाले घाव दूर हो जाते हैं।

---

(११४) औषधि का नामः–

गुड़ सुखारी।

उपयोगः–

फोड़े पकाने तथा घाव भरने में।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्ते की लुगदी बनाकर घाव या फोड़े में लगाने से घाव ठीक हो जाता है। यह फोड़े को पकाकर उसे फोड़ देती है।

---

(११५) औषधि का नामः–

द्रोण पुष्पी, गुमा, गुम।

उपयोगः–

सिरदर्द में।

प्रयोग विधिः–

इसके पत्ते का रस निकालकर चित सुलाकर नाक में दो-दो बून्द दोनों तरफ डालें तथा दोनों तरफ जोर से सांस खींचने को कहें। इसका रस मस्तिष्क में पहुँचते ही जोरों की छींक आयेगी और थोड़े ही देर में तेज एवं पुराने से पुराना दर्द ठीक हो जायेगा।

हिदायतः–इसका लगातार ३ दिन तक उपयोग करें।

---

(११६) औषधि का नामः–

लाजवन्ती।

उपयोगः–

कान बहना, एवं कान का दर्द। बलवर्धक एवं पौष्टिक भी।

प्रयोग विधिः–

इसकी पत्तियों के रस को निकालकर दो, चार बून्द प्रतिदिन कुछ समय तक डालने से कान का बहना, दर्द ठीक हो जाते हैं।

रोग एक उपचार अनेक

क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
१.	नपुंसकता	१–	ओर चारा
		६७–	बेल
		७८–	पाताल कुम्हड़ा
		१००–	काली मूसली
		१०८–	छुटियाकंद
		२७–	जटाशंकर
		२८–	वनतुलसी
		६५–	दशमूल, शतावरी
		१०२–	भोजराज
		११०–	केवाच के मास का जड़
२.	सर्वांगशोथ	२–	अरण्डी
		८१–	जंगली सूरन
		६१–	मैदा, षुंदरा
		७०–	बड़ी दूधी, दूधिया
		८६–	रोहिना छाल
३.	आँख दर्द	२–	अरण्डी
		४८–	तेंदू (झाड़)
		१८–	चाँदनी, दूध भौंगरा
४.	पसली दर्द	२–	अरण्डी
		१५–	विद्यानाशी
५.	बदन दर्द	२–	अरण्डी
		७६–	बला, चिकारी
		८६–	रोहिना छाल
		३६–	सतावरी, सतावर
		११२–	धननियां, डडनिया
६.	दस्तकारक	२–	अरण्डी
७.	चर्मरोग	२–	अरण्डी
		२१–	धनवन्तरी, नागदाना
		४६–	कटई, सत्यानाशी

क्रमांक बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
	६१–	महानीम
	६५–	जल जामुन
	६९–	अपामार्ग, चिड़चिड़ा
	७३–	अर्जुन, कछुआ
	१०४–	गोरख मूड़ी
	८४–	छोटी सामरभंज
	६३–	अनन्तुमूल, हिरनचरी
	३४–	पीला कनेर
	५६–	अमलवास
	६२–	पापड़ी, केवरी
	६६–	चिरोटी, चक्रमर्द
	७०–	बड़ी दूधी, दूधीया
	९६–	पाट काढरी
	१०६–	भंवरमार
८. परिवार नियोजन	२–	अरण्डी
९. बाल काले करना	३–	भृंगराज
	९९–	शिकाकाई
१०. नशाखोरी दूर करना	३–	भृंगराज
११. औषधि शुद्ध करना	३–	भृंगराज
१२. पैर के तलवे फटना	३–	भृंगराज
१३. कैंसर (दर्द)	४–	बारामासी, खंरेंटी
	८२–	औधी
१४. बड़े फोड़े	४–	बारामासी, खंरेटी
	४१–	अतिबला
	६८–	बरगद, वट
	१९–	सेमल, सेमर
	५८–	गुलर, दुमर
	११४–	गुड़ सुखारी
१५. पेशाब में जलन	४–	बारामासी, खंरेटी
	२३–	तालमखाना
	५२–	धाय, जिलबोली
	१०२–	भोजराज

क्रमांक	बिमारियां	औषधि क्र.	दवाईयाँ
		६३–	अनन्तुमूल
		४७–	बनजीरा
		५६–	कंदुर, बन हल्दी
१६.	प्रसवकारक	२२–	सफेद मूसली
		६९–	अपामार्ग, चिड़चिड़ा
१७.	बच्चों के टेड़े पैर	००–	जमनी, रमतल्ला
१८.	बच्चों के रोने में	००–	जमनी, रमतल्ला
१९.	दमा	५–	केला
		१४–	हटशंकर
		२९–	मदार अकौना
		७२–	महुआ
		५७–	अंकवन आक
		७४–	वनतुलसी
		६९–	अपामार्ग, चिड़चिड़ा
२०.	पथरी	५–	केला
		३७–	सतगठामी घाँस
२१.	बुखार	५–	केला
		३५–	चिट, छिन्दी, छि
		४५–	छोटी कटेरी
		५७–	अंकवन आक
		८६–	हुलहुलिया
		१२–	पंचकुरिया, पंचगुडरू
		४०–	नागरमोना
		६७–	बेल
		९०–	बच, बच्छ
२२.	घाव भरने में	६–	कजेरा, चुन्चु
		७५–	पीपल, बड़ा पीपल
		८८–	बाँस का अंकुर
		१११–	गेंदा या गोदा
		११४–	गुड़ सुखारी

क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
		५१–	राज तम्बाकू
		८०–	हसली कंद
		१०१–	भिरहा
		११३–	गुडरू, गुंडरू
२३.	रक्त बंद करने में	६–	कजेरा, चुन्चु
		८–	कुब्बी या कुतबी
२४.	पोष्टिकता के लिये	९–	तीन पत्ते का पलास
		१९–	सेमल, सेमर
		३६–	सतावरी, सतावर
		७८–	पाताल कुम्हड़ा
		२२–	सफेद मूसली
		६६–	चिरोटी
		९५–	दशमूल, सतावरी
२५.	जलने पर	००–	जंगली भिण्डी
		५८–	गुलर, दुमर
		१०–	नागफणी, पत्नवाली
२६.	विष नाशक	११–	लहजीरा, चिराचिटा
२७.	हिस्टीरिया	१५–	विद्यानाशी
२८.	स्मृति खराब	१६–	लपटनिया लारा
		१०९–	घोरब्रज (घोडबज्व)
		६३–	अनन्तुमूल, छापरनार
		९०–	बच, बच्छ
२९.	दंत रोग	१६–	लपटनिया लारा
		७०–	बड़ी दूधी, दूधिया
		७९–	सेमरकंद, सेमल
		५७–	अंकवन, आक
		७३–	अर्जुन, कछुआ
३०.	रक्तवर्धक	१७–	चौलाई भाजी
३१.	श्वेत प्रदर	१७–	चौलाई भाजी
		५८–	गुलर, दुमर
		६५–	जल जामुन
		७९–	सेमरकंद, सेमल

क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
		५१–	राज तम्बाकू
		६२–	पापड़ी, केवड़ी
		७७–	खंरेटी, बिलयारी
		८३–	रामदतौन
३२.	मासिक धर्म	१६–	सेमल, सेमर
		६३–	रक्त विहार, रक्तजड़ी
३३.	बाँझपन	१२–	पचकुरिया, पंचगुडरू
		७५–	बड़ा पीपल
		१६–	सेमल, सेमर
३४.	सुजाक	२०–	धर्मछड़ी सेहारा
३५.	सिफलिस	२०–	धर्मछड़ी सेहारा
३६.	बिच्छू दंश	२२–	सफेद मूसली
		५६–	अमलवास, धतबहरे
		२७–	जटाशंकर
		६६–	अपामार्ग, चिड़चिड़ा
३७.	नारूरोग	२६–	अरहर तूअर
३८.	कुत्ता काटने पर	२६–	मदार, अकौना
		६६–	अपमार्ग, चिड़चिड़ा
		५७–	अंकवन, आक
		७७–	खंरेटी
३६.	वातरोग	२६–	मदार, अकोना
		४६–	केऊकादा
		५६–	अमलवास धतबहरे
		५६–	कंधूर या बनहल्दी
		७८–	पाताल कुम्हड़ा
		८१–	जंगली सूरन
		३६–	चरोठा, चकोरा
		५१–	राज तम्बाकू,
		५७–	अंकवन, आक
		६०–	द्विमोगी
		८०–	हसली कद
४०.	कब्जनाशक	३१–	आंवला, आमला
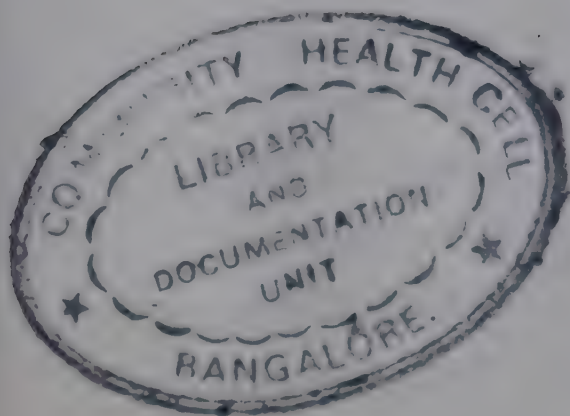
क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
४१.	पित्त नाशक	३०–	मेन्हर
		५४–	पित्त पापड़ा
		३१–	आँवला, आमला
४२.	दीर्घायु	३१–	आँवला, आमला
४३.	चक्कर आने में	३१–	आँवला, आमला
४४.	स्वपन दोष	३५–	चिट, छिंदी, छी
४५.	भूख बढ़ाने में	३५–	चिट, छिंदी, छी
४६.	प्रसूतावस्था में	३६–	सतावरी, सतावर
		७०–	बड़ी दूधि, दूधिया
		६५–	दशमूल, सतावरी
		२२–	सफेद मूसली
		६३–	अनन्तमूल, छापरनार
४७.	कर्णशूल	३७–	सतगटामी घास
		११६–	लाजवन्ती
		८५–	बगड़ुर, बगडाली
४८.	खूनी पेचिस	४२–	भैंसा लाखन
		५१–	राज तम्बाकू
		१०५–	पेड़ी मुर्री, ऐटी मुर्री
		४३–	पड़िन गिलौई
		७१–	पुरलू, गिधोन
		६०–	बच, बच्छ
४९.	मलेरिया	३२–	दमजरी घास
		८६–	हुलहुलिया, उलउलिया
		४३–	पडिन गिलौई
५०.	उदर रोग	२५–	धनकट, मरोड़फली
		४३–	पडिन गिलौई
		६६–	चिरोटी, चक्रमर्ग
		८१–	जंगली सूरन
		२६–	अरहर तुअर
		७२–	महुआ

क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
५१.	टी. बी.	४३–	पडिन गिलौई
५२.	छाजन, एक्जिमा	४६–	कटई, सत्यानाशी
		२७–	जटा शंकर
		५१–	राज तम्बाकू
५३.	गर्भ निरोधक	४८–	तेंदू झाड़
		७९–	सेमरकंद, सेमर
५४.	सफेद दाग (जलने पर)	५२–	धाय जिलबोली
५५.	रक्त प्रदर	५२–	धाय जिलबोली
५६.	टूटी हड्डी जोड़ना	६४–	तीन पनिया, चिकारी
		८७–	लोकपाल, डोकर बेला
		७६–	बला, चिकारी
		९२–	मसबन्दी कंदी
५७.	हृदयरोग	७३–	अर्जुन, कछुआ
५८.	सर्पदंश	२१–	धनवन्तरी नागदाना
		७५–	पीपल, बड़ा पीपल
		२४–	खर्रा, खंडारी
		१०६–	भँवरमार
५९.	सिरदर्द	६३–	अनन्तमूल, हिरनचरी
		६२–	पापड़ी, केवड़ी
		११५–	द्रोण पुष्पी, गुम, गुमा
		२४–	खर्रा, खंडारी
		६२–	पीपल, बड़ा पीपल
६०.	बवासीर	४३–	पडिन गिलोई
		५५–	कुकरदोना, कुकरोधा
		९७–	लताकरंज, गटारन
		५०–	बिदारी कंद
		८१–	जंगली सूरन
६१.	कृमिनाशक	३४–	पीला कनेर
		९७–	लता करंज, गटारन
		११०–	केवाच के मास का जड़

क्रमांक	बिमारियाँ	औषधि क्र.	दवाईयाँ
		३३–	डिकामाली
		६०–	बच, बच्छ
६२.	मूत्रावरोध	८८–	बाँस का अंकुर
६३.	सूखा रोग	४१–	अतिबला
६४.	अतिसार	४८–	तेंदू झाड़
		१०५–	पेड़ी मुर्री, ऐटी मुर्री
६५.	रक्तातिसार	५३–	कुटज, कुड़ोकोरिया
६६.	बच्चों के दस्त बंद करने	६८–	बरगद, बड़, वट
		५–	केला
६७.	बहरापन दूर करने में	७५–	पीपल, बड़ा पीपल
६८.	पीलिया	६८–	डीकामली, बिनामाली
		७७–	खंरेटी, विलयारी
६९.	गठियाबाद	७८–	पाताल कुम्हड़ा
७०.	परासिता (ठंडापन)	८४–	छोटी सामरभंज
७१.	पाठाघाट (कैंसर)	८५–	बगडूर, बगडाली
७२.	सन्नीपात	६०–	बच, बच्छ
७३.	पेट में धातु चले जाने पर	५–	केला
७४.	बच्चों के आंव दस्त	१३–	बहुमूली
७५.	आँख आने पर	१७–	चौलाई भाजी
७६.	सफेद दस्त	२०–	धर्मछड़ी सेहरा
७७.	उपदंश	२०–	धर्मछड़ी सेहरा
७८.	फिरंग	२०–	धर्मछड़ी सेहरा
७९.	पेट की ऐंठन	२५–	धनकट, मरोड़फली
८०.	सर्दी	२६–	अरहर तूअर
८१.	कुकर खाँसी	२९–	मदार, अकौना
८२.	उल्टी कराने में	३०–	मेन्हर
८३.	शीतनाशक	३६–	सतावरी, सतवार
८४.	वायुनाशक	३६–	सतावरी
८५.	रक्तचाप	४०–	नागरमौना, धुटला
८६.	दांत के कीड़े	४४–	बड़ी मटकटईयाँ, पंचरईय